संगीत नाटक अकादेमी
Sangeet Natak Akademi

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण योजना के अन्तर्गत

प्रथम प्रगति विवरण

यायावर संतों की लोकभाषा, लोकसंस्कृति और लोकसंगीत का संरक्षण एवं संवर्द्धन

संदर्भ संख्या : 28-6/आई सी एच- स्कीम/104/2015-2016
दिनांक 29 जनवरी 2016

प्रस्तुति-
डॉ0 देवेन्द्र कुमार सिंह
मुख्य अन्वेषक
बी. 2/64, भदैनी, वाराणसी-221 001
मोबाइल : +91 9415994509
ईमेल : dr.dksvaranasi@gmail.com

अनुक्रम

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
1.	भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना विषयक प्रपत्र का उत्तरालेख	1-9
2.	प्रगति विवरण	10-21
	(क) भूमिका	
	(ख) प्रगति आख्या में सम्मिलित शीर्षक	
	(ग) शीर्षक का विस्तारीकरण	
	(घ) भजन-	
	(i) अघोरी सम्प्रदाय	
	(ii) सरभंगी सम्प्रदाय	
	(iii) सूफी सम्प्रदाय	
	(iv) सत्नामी सम्प्रदाय (बाबरी पंथ) हस्तलेख	
	(v) सत्नामी सम्प्रदाय (टंकण)	
3.	साक्षात्कार	22-25
4.	सन्दर्भ ग्रन्थ- हस्तलेख / पुस्तक	26
5.	निवेदन	27

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना

1. प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य :

   - उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार प्रांत

2. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का नाम :
   (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेजी में)

   - यायावर संतों की लोकभाषा, लोकसंस्कृति और लोकसंगीत का संरक्षण एवं संवर्धन (स्थानीय)

     Yayavar Santo Ki Lokbhasha, Loksanskriti aur Loksangeet ka Sanrakshan aur Samvardhan (Local)

3. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बन्धित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण :

   - पूर्वी उत्तर प्रदेश का भोजपुरी एवं अवधी क्षेत्र, भाषा हिन्दी, उपभाषा भोजपुरी एवं अवधी

4. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बन्धित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क :
   (विवरण अलग से संलग्न करें)

   - यायावर संत परम्परा। इन संतों की घुमक्कड़ प्रवृत्ति होने के कारण किसी एक क्षेत्र विशेष अथवा परिवार से सम्बद्धता नहीं।

     नवीं शताब्दी के सिद्ध कणहप्पा ने वेद और ब्राह्मण विरोध को शास्त्र, संस्कृत और वर्ण व्यवस्था को लक्षित करते हुए भाषा और उसके लोक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। सिद्धों की चर्या-संस्कृति का अपना एक निश्चित महत्व इसलिए रहा कि समाज

व्यवस्था से अलग उनका तंत्र पीठों तथा विभिन्न प्रकार के एकान्तिक साधन से सम्बन्ध था। ये सिद्ध बार-बार वर्ण व्यवस्था को अतिक्रमित करते हैं। इनके चर्यापदों में प्राचीन हिन्दी का जो रूप है, वह अपभ्रंश, अवहट्ट या यथावसर व्रजबुलि में मिलता है। इन सन्तों के कार्य क्षेत्र प्रायः असम, बंगाल, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब तक फैला था, जो यायावर संत थे। नवीं शताब्दी के पश्चात् यायावर संतों की भाषा में भोजपुरी और अवधी के अनेक प्रयोग दिखाई देते हैं।

5. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों की जीवंतता का विस्तारित भौगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है / पहचान है :

- यायावर संतों का कार्य क्षेत्र प्रायः असम, बंगाल, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और पंजाब तक विस्तृत है। चूँकि वाराणसी धार्मिक नगरी है तथा भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भोजपुरी का प्रमुख केन्द्र है, इसलिए यायावर संतों का इस क्षेत्र से आना, जाना तथा विचरना होता रहता है।

6. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा / उसका विवरण :

1. मौखिक परम्पराएँ एवं अभिव्यक्तियाँ

   (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)

- सधुक्कड़ी भाषा (अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का एक रूप)

2. प्रदर्शनकारी कलाएँ

- कुछ नहीं

3. सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार एवं उत्सव आदि

- अनुष्ठान, पूजा परम्परा का विषय यथा- दीक्षा, प्रस्थान, पूजा पद्धति विचार दर्शन, इत्यादि।

4. प्रकृति एवं जीव-जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएँ

- कुछ नहीं।

5. पारंपरिक शिल्पकारिता

- कुछ नहीं।

6. अन्यान्य

- यायावर संतों की गायन परम्परा शास्त्रीय और लोकराग दोनों होते हैं। इनके वाद्य यंत्र मुख्यतः पखावज, झाल, खजड़ी, सारंगी इत्यादि है।

7. कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें।

- नवीं शताब्दी के सिद्ध कणहप्पा ने वेद और ब्राह्मण विरोध को शास्त्र, संस्कृत और वर्ण व्यवस्था को लक्षित करते हुए भाषा और उसके लोक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। सिद्धों की चर्या-संस्कृति का अपना एक निश्चित महत्व इसलिए रहा कि समाज व्यवस्था से अलग उनका तंत्र पीठों तथा विभिन्न प्रकार के एकान्तिक साधना से सम्बन्ध था। ये सिद्ध बार-बार वर्ण व्यवस्था को अतिक्रमित करते हैं। इनके चर्यापदों में प्राचीन हिन्दी का जो रूप है, वह अपभ्रंश, अवहट्ट या यथावसर व्रजबुलि में मिलता है। इन सन्तों के कार्य क्षेत्र प्रायः असम, बंगाल, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब तक फैला था, जो यायावर संत थे। नवीं शताब्दी के पश्चात् यायावर संतों की भाषा में भोजपुरी और अवधी के अनेक प्रयोग दिखाई देते हैं।

  आगे चलकर सूफियों ने अपभ्रंश में प्रचलित दोहा और चौपाई की परम्परा को अपने प्रेमाख्यानों में विकसित किया और प्रेमाख्यान तथा चरित काव्यों के लिए अवधी को एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित कर लिया। मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, जायसी, उस्मान और नूर मुहम्मद जैसे सूफियों के कहानी, उपखान की भाषा अवधी है। साथ ही कृष्णदास की राम कथा, तुलसीदास रामचरितमानस के साथ ही रैदास के प्रह्लादचरित,

संत गोपाल के ध्रुवचरित जैसे चरित-काव्य की भाषा अवधी है। शिहल, अष्टछाप के तमाम कवि और रीतिकाल के अनेक कवियों की काव्य-भषा ब्रज है। इस तरह स्पष्ट है कि राजआश्रय, आश्रमों, प्रतिष्ठानों में चलने वाली भाषा के अनेक साहित्यिक रंग है। इन सारी भाषाओं से अचल, गृहस्थ या आश्रमस्थ संस्कृति का सम्बन्ध है। लेकिन ये भाषाएँ दसवीं शताब्दी से आरम्भ होकर सत्रहवीं शताब्दी तक जिस तरह साहित्य-पर्याय बनती है। उसी तरह से यायावर, नाथयोगियों, सूफियों से अलग मुस्लिम या हिन्दू संतों की एक भाषा अलग से खड़ी होती है- खास तरह से साखी और सबद की भाषा अर्थात् चेताने और सम्बोधन की भाषा संगीत से परिपूर्ण है।

परियोजना का कार्य यायावर संतों के मौखिक परम्परा और लिखित साहित्य के आधार पर निर्भर होगा, जिसके मूल में उत्तर मध्य क्षेत्र की लुप्त होती संस्कृति और संगीत के स्वरूप को विकसित होगा।

प्रस्तावित परियोजना पर कार्य करने हेतु यायावर संस्कृति के साधुओं का क्षेत्र गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, मऊ, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी, मीरजापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद, बाँदा, चित्रकूट, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर इत्यादि जनपद निर्धारित किया गया है।

घूमकर जीवन व्यतीत करने वाले साधुओं की भाषा सामान्य के साथ-साथ सधुक्कड़ी होती है। उनके पदों में संगीत का भी समावेश होता है। अर्थात् भाषा और संगीत के अर्न्तसम्बन्ध से यायावर संस्कृति का निर्माण होकर लोक पक्ष को समृद्ध करता है। उनके वाद्य यंत्रों से निकले संगीत तत्व सर्वथा जन सामान्य में उपेक्षित ही रहे हैं, इसलिए इसका समग्र रूप से संरक्षण नहीं हो सका। घुमक्कड़ों की भाषा के रूप में इन यायावरों का लोक और सामाजिक पक्ष दोनों उपेक्षित रहा। यहाँ यह भी विचारणीय है कि भोजपुरी, अवधी, इत्यादि मुख्य बोलियों की लुप्त होते लोक के शब्द, संगीत और संस्कृति का संरक्षण किया जाना इस सांस्कृतिक परम्परा और विरासत को श्रीसम्पन्न करेगा।

यह भी उल्लेखनीय है कि यायावर साधुओं, निहंगों और कलाजीवी साधुरूपधारी भिखारियों से सम्बन्धित लुप्तप्राय होती उनकी भाषा, संस्कृति और संगीत को संरक्षित

करने के लिए किताबों से बाहर बैठकर लोक भाषा, लोक साहित्य और लोक संगीत के इस महत्वपूर्ण किन्तु उपेक्षित पक्ष को उद्घाटित किया जाना समीचीन होगा।

भारत के उत्तर मध्य क्षेत्र में सूफी संतों के अनेक ग्रंथ हैं, जो अब भी अप्रकाशित हैं। इसके साथ ही इन संतों से जुड़ी हुई कुछ कथा गीत हैं और निर्गुन गायन की परम्परा भी है जिसमें गोपीचन्द्र, भर्तृहरि, शिव विवाह, रामावतारी, कृष्ण विवाह, गीत कुँवरविजय मल्ल, सारंग सदावृज, विहुला, बिसहरी, सुहेल, गणीनाथ से संबंधित गाथा-गीत है। इन निर्गुनों और गाथा-गीतों को संग्रहीत किये बिना उत्तर मध्य भारत में संतों की शक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता। संत भक्तों के मिलन के रूप जो मधुरोपासना, सहज साधना प्रचलित हुई, जिसके अनेक मंदिर और मठ है। अयोध्या का लक्ष्मण किला, हनुमान गढ़ी, बनारस का गोपाल मंदिर और सम्पूर्ण उत्तर मध्य भारत में फैली हुई ठाकुर बाड़ियाँ, प्रचुर साधानात्मक साहित्य समेटे हुए हैं। इन सबकी सूची बनाना और ग्रंथों का परिचय देना परियोजना के सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा के अध्ययन की महत्ता को परिलक्षित करता है।

8. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है। इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त ? अगर है, तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है ?

- इस सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के यायावर संत ही अधिकृत अभ्यासी हैं। इस परम्परा में नये साधुओं को पूरी पारम्परिक जीवन शैली, रीति रिवाज सौपते हैं, जिसे ये ग्रहण करते हैं।

9. ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है ?

- ज्ञात नहीं / ऐसी कोई जानकारी नहीं।

10. आज वर्तमान में सम्बन्धित समुदाय के लिए इन तत्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता है ?

- जी हाँ, क्योंकि प्राचीन हिन्दी की इस यायावरी परम्परा को मठ और आश्रम से बाहर निकालकर भिक्षाधर्मी कलाजीवी पेशों से भी संबद्ध किया गया है। साईं, जोगी, जती, नट, भाट, मंगता, भगत, पाँवरियाँ, वक्को, लोना चमार, बैदा मलंग जैसी अनेक जातियों ने इस साधुविद्या को जीविका से जोड़कर धार्मिक घृणा के बीच संवाद और सद्भाव का वातावरण बनाने का कार्य किया है। प्राचीन हिन्दी की यह यायावरी संस्कृति, उससे जुड़ा हुआ विचार और दर्शन सनातन रूप से प्रासंगिक है। इसलिए कि शास्त्रवाद जैसी रूढ़ियाँ भारतीय जीवन की परांगमुखी संस्कृति से सम्बद्ध है। जब भी गतिशीलता और बदलाव की आवश्यकता होगी, ये यायावर संत किसी विशेष क्षेत्र के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश की अस्मिता के लिए अनिवार्य हो जायेंगे। आश्चर्य की बात है कि धार्मिक होते हुए भी इन संतों के विचार धार्मिक रूढ़ियों और विचारों का सामना करते हैं। पोथीबद्ध होते हुए भी इन संतों की दृष्टि सम्प्रदायवाद की दुर्बलताओं का मुकाबला करती है। साधना और विश्वास को कवचबद्ध होने पर भी इन संतों की साधना मनुष्य को मुक्त करती है। आदमी और आदमी की दूरियों को खत्म करने के लिए उपाय और माध्यम बन जाती है। अतएव इन यायावर संतों की भाषा और उससे प्रभावित जन संस्कृति पर अनुसंधानपरक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक और औचित्य से परिपूर्ण है।

11. क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों, क्या प्रस्तावित योजना के तावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुँचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

- बिल्कुल नहीं।

12. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की योजना क्या उससे सम्बन्धित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है ?

- हाँ, निश्चित रूप से।

13. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/कदमों/प्रयासों के बारे में जानकारी, जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं।

उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बन्धित समुदायों, समूहों और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है।

1. औपचारिक एवं अनौपचारिक तरीके से प्रशिक्षण (संचरण)
2. पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध
3. रक्षण एवं संरक्षण
4. संवर्धन एवं बढ़ावा
5. पुनरुद्धार / पुनर्जीवन

- इस विषय से सम्बन्धित औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रशिक्षण, पहचान, दस्तावेजीकरण, शोध, संरक्षण, संवर्धन, पुनरुद्धार / पुनर्जीवन आदि की कोई सूचना और जानकारी नहीं है।

14. स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण दें।

- कुछ नहीं।

15. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बन्धित कारणों का ब्योरा दें।

- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा के कारण समाज में यायावर साधुओं द्वारा एक विचार पीठ पर राष्ट्रव्यापी संस्कृति निर्मित होती है। इन साधुओं के पास साखी, सबद और दोहरा है, एक मलंग यायावर भाषा है, सम्बोधन है, गायन और चेताने का कार्यक्रम भी है। ऐसे जोगियों और संतों की लोक भाषा की एक भाषा-परम्परा और लोक संस्कृति सुनिश्चित है, जिसे वैज्ञानिक निकष पर स्थापित किया जाना समीचीन है।

16. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ?

(इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके। ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा वे तत्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके।)

- यायावर संतों के कार्य के महत्व को रेखांकित किया जायेगा, तो इस प्रकार की साधु परम्परा के महत्व को बल मिलेगा।

17. सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

- सोद्देश्य रूप से पृथक से यायावरों की कोई भागीदारी नहीं होती, बल्कि इनके कर्म, रीति-रिवाज, स्वाभाविक प्रक्रिया के अन्तर्गत जो ग्रहण कर लेते हैं, उसमें यायावर संतों की सहभागिता को उन पर आरोपित नहीं किया जा सकता, बल्कि उनके स्वतंत्र परिचलन पर निर्भर होता है।

18. सम्बन्धित समुदाय के संगठनों या प्रतिनिधियों (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों से जुड़े हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य गैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

1. संस्था / कम्पनी / हस्ती का नाम
2. सम्बन्धित / अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क
3. पता
4. फोन नंबर : मोबाइल नं. :
5. ईमेल :
6. अन्य सम्बन्धित जानकारी

- ऐसी किसी भी व्यक्ति, संस्था, कम्पनी, एजेन्सी के बारे में अब तक कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

19. किसी मौजूद इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय/राजकीय/राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभालकर रखता हो उसकी जानकारी दें।

- ज्ञात नहीं।

20. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों से सम्बन्धित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो-विसुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों/व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि जो सम्बन्धित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के बारे में हों।

- उपलब्ध नहीं।

डॉ0 देवेन्द्र कुमार सिंह
मुख्य अन्वेषक
बी. 2/64, भदैनी, वाराणसी-221 001
मोबाइल : +91 9415994509
ईमेल : dr.dksvaranasi@gmail.com

प्रगति विवरण

भूमिका-

प्रगति आख्या में सर्वेक्षण, सूचना, साक्षात्कार, लिखित स्रोत आदि पर आधारित यायावर संतों की लोकभाषा, लोकसंस्कृति के संदर्भ की प्रस्तुति है।

नवीं शताब्दी के सिद्ध कणहप्पा ने वेद और ब्राह्मण विरोध को शास्त्र, संस्कृत और वर्ण व्यवस्था को लक्षित करते हुए भाषा और उसके लोक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। सिद्धों की चर्या-संस्कृति का अपना एक निश्चित महत्व इसलिए रहा कि समाज व्यवस्था से अलग उनका तंत्र पीठों तथा विभिन्न प्रकार के एकान्तिक साधना से सम्बन्ध था। ये सिद्ध बार-बार वर्ण व्यवस्था को अतिक्रमित करते हैं। इनके चर्यापदों में प्राचीन हिन्दी का जो रूप है, वह अपभ्रंश, अवहट्ट या यथावसर व्रजबुलि में मिलता है। इन सन्तों के कार्य क्षेत्र प्रायः असम, बंगाल, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब तक फैला था, जो यायावर संत थे। नवीं शताब्दी के पश्चात् यायावर संतों की भाषा में भोजपुरी और अवधी के अनेक प्रयोग दिखाई देते हैं।

आगे चलकर सूफियों ने अपभ्रंश में प्रचलित दोहा और चौपाई की परम्परा को अपने प्रेमाख्यानों में विकसित किया और प्रेमाख्यान तथा चरित काव्यों के लिए अवधी को एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित कर लिया। मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, जायसी, उस्मान और नूर मुहम्मद जैसे सूफियों के कहानी, उपखान की भाषा अवधी है। साथ ही कृष्णदास की राम कथा, तुलसीदास रामचरितमानस के साथ ही रैदास के प्रह्लादचरित, संत गोपाल के ध्रुवचरित जैसे चरित-काव्य की भाषा अवधी है। शिहल, अष्टछाप के तमाम कवि और रीतिकाल के अनेक कवियों की काव्य-भषा ब्रज है। इस तरह स्पष्ट है कि राजआश्रय, आश्रमों, प्रतिष्ठानों में चलने वाली भाषा के अनेक साहित्यिक रंग है। इन सारी भाषाओं से अचल, गृहस्थ या आश्रमस्थ संस्कृति का सम्बन्ध है। लेकिन ये भाषाएँ दसवीं शताब्दी से आरम्भ होकर सत्रहवीं शताब्दी तक जिस तरह साहित्य-पर्याय बनती है। उसी तरह से यायावर, नाथयोगियों, सूफियों से अलग मुस्लिम या हिन्दू संतों की एक भाषा अलग से खड़ी होती है- खास तरह से साखी और सबद की भाषा अर्थात् चेताने और सम्बोधन की भाषा संगीत से परिपूर्ण है।

परियोजना का कार्य यायावर संतों के मौखिक परम्परा और लिखित साहित्य के आधार पर निर्भर है, जिसके मूल में उत्तर मध्य क्षेत्र की लुप्त होती संस्कृति और संगीत के स्वरूप को विकसित करना है।

प्रस्तावित परियोजना पर कार्य करने हेतु यायावर संस्कृति के साधुओं का क्षेत्र गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, मऊ, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी, मीरजापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद, बाँदा, चित्रकूट, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर तथा पश्चिमी बिहार के जनपद निर्धारित किये गये हैं।

घूमकर जीवन व्यतीत करने वाले साधुओं की भाषा सामान्य के साथ-साथ सधुक्कड़ी होती है। उनके पदों में संगीत का भी समावेश होता है। अर्थात् भाषा और संगीत के अर्न्तसम्बन्ध से यायावर संस्कृति का निर्माण होकर लोक पक्ष को समृद्ध करता है। उनके वाद्य यंत्रों से निकले संगीत तत्व सर्वथा जन सामान्य में उपेक्षित ही रहे हैं, इसलिए इसका समग्र रूप से संरक्षण नहीं हो सका। घुमक्कड़ों की भाषा के रूप में इन यायावरों का लोक और सामाजिक पक्ष दोनों उपेक्षित रहा। यहाँ यह भी विचारणीय है कि भोजपुरी, अवधी, इत्यादि मुख्य बोलियों की लुप्त होते लोक के शब्द, संगीत और संस्कृति का संरक्षण किया जाना इस सांस्कृतिक परम्परा और विरासत को श्रीसम्पन्न कर रहा है।

यह भी उल्लेखनीय है कि यायावर साधुओं, निहंगों और कलाजीवी साधुरूपधारी भिखारियों से सम्बन्धित लुप्तप्राय होती उनकी भाषा, संस्कृति और संगीत को संरक्षित करने के लिए किताबों से बाहर बैठकर लोक भाषा, लोक साहित्य और लोक संगीत के इस महत्वपूर्ण किन्तु उपेक्षित पक्ष को उद्घाटित किया जाना समीचीन है।

भारत के उत्तर मध्य क्षेत्र में सूफी संतों के अनेक ग्रंथ हैं, जो अब भी अप्रकाशित हैं। इसके साथ ही इन संतों से जुड़ी हुई कुछ कथा गीत हैं और निर्गुन गायन की परम्परा भी है जिसमें गोपीचन्द्र, भर्तृहरि, शिव विवाह, रामावतारी, कृष्ण विवाह, गीत कुँवरविजय मल्ल, सारंग सदावृज, विहुला, बिसहरी, सुहेल, गणीनाथ से संबंधित गाथा-गीत है। इन निर्गुनों और गाथागीतों को संग्रहीत किये बिना उत्तर मध्य भारत में संतों की शक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता। संत भक्तों के मिलन के रूप जो मधुरोपासना, सहज साधना प्रचलित हुई, जिसके अनेक मंदिर और

मठ है। अयोध्या का लक्ष्मण किला, हनुमान गढ़ी, बनारस का गोपाल मंदिर और सम्पूर्ण उत्तर मध्य भारत में फैली हुई ठाकुर बाड़ियाँ, प्रचुर साधानात्मक साहित्य समेटे हुए हैं। इन सबकी सूची बनाना और ग्रंथों का परिचय देना परियोजना के सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा के अध्ययन की महत्ता को परिलक्षित करता है।

प्रगति आख्या में सम्मिलित शीर्षक-

- यायावर संतों की लोकभाषा, लोकसंस्कृति और लोकसंगीत का संरक्षण एवं संवर्धन

शीर्षक का विस्तारीकरण-

- भारतीय संतों में यायावर साधुओं ने सामाजिक कुरीतियों और जड़ता के विरुद्ध जो कार्य किये वह भारतीय संस्कृति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति की रक्षा में इन संतों का उत्कृष्ट योगदान है। ईश्वर विषयक विभिन्न नामों की अवधारणा तथा इस विषयक अनेक रुढ़िगत परम्पराओं को तोड़कर शस्त्र और शास्त्र से अलग हटकर भारतीय समाज को प्रगतिशीलता की नई दिशा देने वाले संतों के नाम उनकी रचनाएँ और उनके सांस्कृतिक अवदान के महत्व का निरूपण किया जाना समीचीन है।
- यायावर संतों की इतिहास परम्परा और सामाजिक संदर्भों के क्रम में वाचिक परम्परा और लिखित साहित्य (अल्प यात्रा में) मिलते हैं।

मौखिक रूप में गोपीचन्द भरथरी, रामावतारी, कृष्णावतारी, शिव विवाह, सिहुला, राजा पूरणमल की गाथा, सोरठी वृजभार, सारंग सदावृज, नयकवा जैसे विभिन्न दीर्घ कथागीत के रूप में यह मौखिक साहित्य उपलब्ध है, जिसे मुख्य रूप में जोगी, नट, मंगता, अल्हैत, मलाह, माँझी गाते हैं। इन कथागीतों के साथ ही लोरकी और आल्हा जैसे वीर काव्य की मौखिक परम्परा में उपलब्ध है, जिनमें जोगी कथागीतों के अनेक प्रसंग और रूढ़ियाँ भी आती हैं।

दूसरी परम्परा सबदी, पद, प्राण संकली, अभय यात्रा, तिन्थी, रोमावली, तिलक यात्रा, गोष्ठी, बोध, पुराण, मुद्रा, सिद्धि, चक्र और राशि से सम्बन्धित है। इसके बाद ये परम्पराएँ विभिन्न प्रकार की चरित्र गाथाओं से चलती हैं। इस विविध रूपात्मक भाषा और साहित्य के पाँच प्रभाग किये जा सकते हैं, निश्चित रूप से पाँचों प्रभाग मंदिर, मूर्ति, शास्त्र, संस्कृत भाषा, विप्र

और वर्णाश्रम के प्रत्याख्यान के रूप में सक्रिय हुए थे। बाद में उनमें मंदिर मूर्ति विश्वास सम्बन्धी कुछ विपथन भी पाया जाता है।

अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत परियोजना पर निम्नवत संदर्भों पर कार्य हो रहा है-

1. सिद्धनाथ परम्परा के संत समुदाय
2. सिद्ध तांत्रिकों की परम्परा के सरभंगिया एवं अघोरी,
3. मज़ारों और तकियों से सम्बद्ध सूफी सम्प्रदाय और शरीफ केन्द्र,
4. सूफी बाबरी पंथ से सम्बन्धित राम राग वाला सम्प्रदाय
5. संत-भक्त मिलन से सम्बन्धित विभिन्न वैरागी और साधु सम्प्रदाय।

अनुसंधान कार्य को न्यायसंगत ढंग से पूरा करने के लिए योजना में निम्न रूपरेखा भी सम्मिलित है-

1. विभिन्न मठों के साधुओं और यायावर जोगियों से सम्बन्धित मौखिक और लिखित साहित्य के लोकसंस्कृति से विभिन्न रूपों का प्रयोग और सर्वेक्षण।
2. लोकसंस्कृति और लोकसंगीत से सम्बन्धित भिन्न कार्यकलाप और लोकसम्बन्धी संस्कृति का अन्वेषण।

उपरोक्त के अतिरिक्त देश एवं विदेश के विभिन्न पुस्तकालयों में हस्तलिखित ग्रंथों के माध्यम से सहायता ली जा रही है।

अघोरी सम्प्रदाय के संत अघोराचार्य बाबा कीनाराम, सरभंगी सम्प्रदाय के धरनी दास, सूफी सम्प्रदाय के संत अहमक, सत्नामी सम्प्रदाय के बाबरी साहिबा, यारी साहब, बूला साहब, भीखा साहब, देवकीनंदन साहब, जैसे- यायावर संतों के भजन को घुमक्कड़ साधुओं द्वारा क्षेत्र में यथा अवसर गाये जाते हैं और इनका प्रचलन भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा के अन्तर्गत अपना निश्चित महत्व रखते हैं, जो आज भी क्षेत्रों में प्रचलित हैं। सिद्धों, नाथों, सरभंगिया और अघोरी साधुओं के साथ-साथ बैरागी साधुओं के भजन और पदों का गायन और प्रचलन सांस्कृतिक परम्परा को अक्षुण्ण करते हैं। इसलिए इनका महत्व और बड़ जाता है कि

भारतीय संस्कृति और दर्शन का समाज सापेक्ष स्वरूप भी मिलता है। इन भजनों और पदों के कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं-

अघोरी सम्प्रदाय-

(1)

कीनाराम फकीरी सहज नहीं
पग धरत निकल गये दूध छठी का ।। टेरी ।।
थारी लोटा से काम नहीं,
एक पूरवा चाहिए काँच मटी का ।। कीना ।।
पूड़ी मिठाई से काम नहीं,
एक भऊरी चाहिए पाव वटी का ।। कीना ।।
शाला दुशाला से काम नहीं,
एक कमरी चाहिए पाँच वटी का ।। कीना ।।
महला दो महला से काम नहीं,
एक झोपड़ी चाहिए, फूस टटी का ।। कीना ।।
कीनाराम नाम बहु राम की,
एक थैली पउली रामरती का ।। कीना ।।

(2)

जग लेखवाँ हम अमहक भइली (टेक)
कर परतीत नाम दोई अच्छर,
एही के भरोषवाँ तीरथ नाहीं कइली ।। 1 ।।
कण्ठी माला सैन कुबड़िया
तिलक उतार के अजब रूप धइली ।। 2 ।।
जाति, कुटुम्ब सब ताना मारै,
तज कुल लजिया फकीर संग खइली ।। 3 ।।
जतियों के खइली कुजतियों के खइली
कवहूँ नाहीं अघइली ।। 4 ।।
कीनाराम नाम बउरहवा
पउली राम नाम धन थइली ।। 5 ।।

(3)

कोई ना बतावे हमके कवने गली जाई राम (टेक)

कहवाँ नहाँई हम का हो चढ़ाई,

भटकत फिरत दरस नाहीं पाईं राम ।। 1 ।।

मन के संग में डहूरत बीतल,

परख परे ना केसे लगन लगाई राम ।। 2 ।।

तन-मन-धन सब सुख के जारे,

बिरथा जनम केसे जियरा बुझाई राम ।। 3 ।।

सकरी गली की रहिया तनिउ नाहिं सूझै,

दिन मोर गाढ़े आइनै के-के हम घोराई राम ।। 4 ।।

कीनाराम दया सत्गुरु की

सत्संग से सरन गति पाईं राम ।। 5 ।।

(4)

कवने बरन सखि सजना तोहार हा (टेरी)

गाँव नहीं ठाँव नहीं हाँथ नाही पाँव नहीं

विन पग फेरी डालैं जग संसार हा ।। 1 ।।

नाम नाही धाम नहिं मांस नाहीं चाम नहिं,

बिना तेल बतिया कै करै उजियार हा ।। 2 ।।

नाव नाहीं वेढ़ा नहिं गुरु नाहीं चेला नहिं,

सुनि ला कि केतनन के करै भव पार हा ।। 3 ।।

रूप नहीं रेख नहिं धरती आकास नाहीं

सेत वरन हउवें सजना हमार हा ।। 4 ।।

किनाराम दया सत्गुरु की,

शब्द सुरत बीचे करो निरुवार हा ।। 5 ।।

सरभंगी सम्प्रदाय-

धरनी एह मन म्रीग भैला हो गुर भैला व्याध ।
दान सबद हिये चुभी गैला हो दरसन साध ।।

धरनी जेहो धनी बिरहनि हो मन धीर्ज न धीर ।
बिहचल विकल, बिलखि चित हो दुबर शरीर ।।

धरनी धीरज न रहे हो बीनु वनवारि ।
रोअत रक्त के अँसुवन हो पंथ निहारि ।।

धरनी पिय परवत पर हो हिए चढ़त डेरात ।
कबहिक पाँव डगमगै हो तब काहाँ ठाँउ ।।

धरनी धरकत हिय जनु हो, हो करक करेज ।
ढरकत भरि-भरि लोचन हो, पिय नाहीं सेज ।।

सूफी सम्प्रदाय-

अवधू साँचे आँच न आवै ।
पद न लटै लाख कोई लौटवै, कुबद हार सब जावै
सार शब्द जो कोई न मानै, मुंह पर झाँट जमावै ।। 1 ।।
जरै न आग बुड़ै न पानी, श्राप शीष नहिं आवै ।
इन्द्र कुबेर और जो रूठैं, रूठिके काह बनावै ।। 2 ।।
साँचे की गति अपरंपार है, तिहुँपुर पार न पावै ।
छुट्टा फिरैं भटक न तिनको, सब कोई शीस झुकावै ।। 3 ।।
अमर लोक से मोहन आये, सोइ सतपंथ चलावैं ।
अहमक शाह की चरण बन्दगी, साँच में साँच मिलावैं ।। 4 ।।

सत्नामी सम्प्रदाय : बाबरीपंथ-

बाबरी पंथ के साधु श्री गुलाल साहब की भजन का हस्तलेख- राम राग

राम राग आरती-

(1)

हिन्दु हद आरती जौ पावै, राम नाम कै मसल चलावै ।
गगन मण्डल में आरति बारै, तबही जीव नेवछावरी डारै ।
सुन्नि कै थार सत्य कै बाती, सुरति निरति बारै दिन राती ।

सुषमन भाँवरि देई देई गावै, ब्रह्मा विष्णु शिव संग न भावै ।
अचल अमूरति आरती तारी, थकित भयो नौ दश नारी ।

रोम रोम आरति बलिहारी, सकल मनोरथ आरति तारी ।
अजर आसन आरति धरी जोंरा, सत्य आरति मन थकित भा मोरा ।

तन मन धन निवछावरी बारी, मोह मया त्यागो सभ झारी ।
आरती सहज सुमिरन करई, आरति चरन सरन पर परई ।

आरती प्रेम नेम जब होई, भला बुरा नहि बूझै कोई ।
आरति फिरि जब नृत समाई, मुकुता छर तसु दुकनाई ।

आरति जब घर बरली बनाई, रोम रोम पद आरति पाई ।
कहै गुलाल आरति हम पाई, जन्म मरन कै संसे मिटाई ।

सत्नामी सम्प्रदाय : बाबरीपंथ-

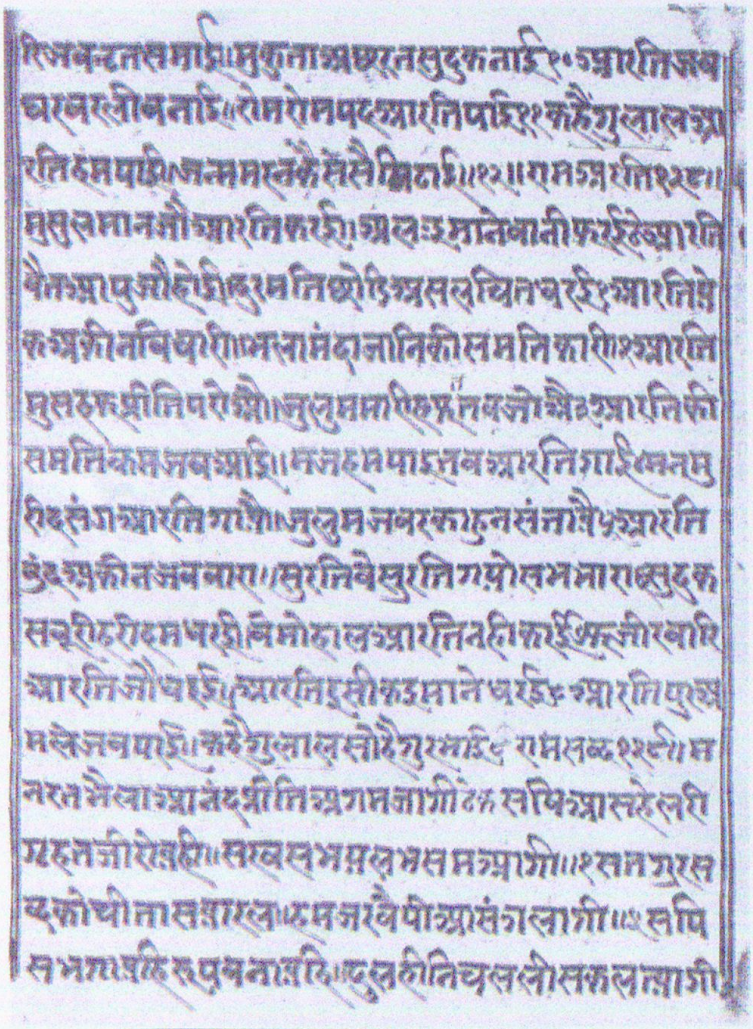

बाबरी पंथ के साधु श्री गुलाल साहब की भजन का हस्तलेख- राम राग

राम राग आरती-

(2)

मुसुलमान जो आरति करई, अल इमाने बानी फरई ।
आरति बैत आपु जौ होई, दुरमति छोड़ असल चित धरई ।

आरति येक अकीन विचारी, भल मंदा जानि किसमत कारी ।
आरति मुसहफ प्रीति पिरोअै, जुलुम मारि हफ्त तब जोअै ।

आरति कीसमति क्रम जब आई, मजहम पाइ तब आरति गाई ।
मन मुरीद संग आरति गावै, जुलुम जवर काहू न संतावै ।

आरति बुन्द यकीन जब वारा, सुरति बेसुरति गयो सभ भारा ।
सुदुक सबुरी हरदम धरई, बे मोहाल आरति नहीं करई ।

फजीर बारि जौ आरति धरई, आरति इसीक इमाने धरई ।
आरति पूर अमले जब पाई, कहै गुलाल सो है गुरुभाई ।

राम आरती-

(3)

राम नाम राम नाम आरती उचारी ।
निर्गुन सोइ सगुन होइ अमित पतित तारी ।। टेक ।।
नारद सनकादि आदि षोजत सब त्यागि वादि
ध्यावत ब्रह्मादि सेस हृदै रूप धारी ।
सारदादि देव बृंद गावत जस विविध छंद
पावतु नहिं नेकु पार वार वुधि हारी ।। 1 ।।

व्यास सुकदेव देव करत विविध भांति सेव
माया परिपंच भार दियो सब डारी ।
व्यापक पूरन अनंत जाके नहिं आदि अंत
सोई भक्त वस्य नित्य करत वेद चारी ।। 2 ।।

कहा बहु कियो ध्यान जप जोग दिये दान
प्रेम बिना तुछ जैसे नदी हीन वारी ।
देवकी मन चित चेतु चेतनिते करो हेतु
नातो काल मारि लेत कहत हों पुकारी ।। 3 ।।

साक्षात्कार

सन्त श्री सत्यानन्द त्यागी
स्थान- करमा बाजार, करछना,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

श्री सदानन्द त्यागी यायावर संतों में अपना स्थान रखते हैं। इनकी अवस्था वर्तमान में लगभग 60 वर्ष होगी। श्री त्यागी जी आजन्म फक्कड़पन का जीवन व्यतीत किये हैं। श्री त्यागी से मुख्य अन्वेषक द्वारा देवता, पूजा, वर्ण-भेद, साधुसंस्कृति और वर्तमान समय के संदर्भ में साक्षात्कार लिया गया, जिसे उद्धृत किया जा रहा है।

देवता के सम्बन्ध में श्री त्यागी का कहना है कि- दैवी स्वभाव का अर्थ है- सदगुण, सदाचार, शिष्टाचार, निष्कपट, मध्यम सात्विक व्यवहार, सेवा, निष्पक्ष आत्म ज्ञान, तत्व ज्ञान, आचार्य उपासना, बाहर-भीतर की पवित्रता, विवेक ज्ञान, उदारता, परोपकार, सत्संग, स्वाध्याय, साधना, सन्त-गुरुजनों का सान्निध्य-सेवा आदि से युक्त होगा। जिन लोगों का इस प्रकार का जीवन है, वे समस्त नारी-नर देवी और देवता हैं। इनके जीते जी इनकी तन, मन, वचन, धन से सेवा करना ही देवी-देवताओं की पूजा-उपासना है। मृत्योपरान्त उनके आदर्शों का मन, वाणी, कर्म से आचरण करना उनकी भक्ति है। इन लक्षणों से युक्त विश्व के किसी लोक, स्थान, रंग, जाति, सम्प्रदाय, देश के समस्त नारी-नर देवी एवं देवता हैं। इसमें काले, गोरे, शिक्षित-अशिक्षित का भी अन्तर नहीं है। त्यागी, गृहस्थ, किसान, व्यापारी, नौकर, मालिक, गरीब, अमीर, मजदूर, ठेकेदार, कर्मचारी, अफसर, चिकित्सक, शिक्षक, वैज्ञानिक, समाजसेवी यदि उपर्युक्त रहनी सम्पन्न हैं, तो सभी देवी-देवता हैं। क्योंकि देवता का अर्थ है- देने वाला। ये सभी अपने आदर्श एवं क्रियान्वयन के द्वारा समाज को बहुत कुछ दिये और दे रहे हैं, देते रहेंगे। ऐसे ही लोगों के आदर्श उजाले में सभी आत्म-कल्याण में लगे हुए हैं।

आदर्शवानों की सेवा, सहयोग, सम्मान करने से ही अपना और समाज का कल्याण संभव है। दुःख नष्ट होगा। सुख की प्राप्ति होगी। बाहर-भीतर स्वर्ग (अविचल शांति) का साम्राज्य होगा। सबके भीतर देवत्व है। कोई भी पुरुषार्थ बल से उसे स्वयं उद्घाटित कर महान बन सकता

है। अलग से किसी लोक-लोकान्तर में देवी-देवताओं की कल्पना कर उनकी आराधना, पूजा करके, दुःख नष्ट होने तथा मन वांछित इच्छाओं की पूर्ति एवं वस्तुओं की प्राप्ति की कामना महा अज्ञान है। स्वयं के साथ छल है।

पूजा के सम्बन्ध में श्री त्यागी कहते हैं कि- पूजा अनेक प्रकार से की जाती है, जिसमें जड़ पूजा, सद्ग्रन्थों की पूजा, त्याग पूजा, कर्म पूजा, चेतन पूजा, सद्गुरु पूजा प्रमुख है। इन पूजाओं को व्याख्यायित करते हुए अपना मंतव्य देते हैं- प्रत्येक प्राणी के हृदय को राम, अल्लाह, गाड का मंदिर, मस्जिद, चर्च, अग्यारी (फायर टेम्पुल), बैतुलमक्दिस, सिनेगाँव (यहूदियों का पूजागृह), पगोडा (बौद्धों का मन्दिर), गुरुद्वारा आदि समझकर उन्हें तन, मन, वचन आदि से किसी भी प्रकार का दुःख न देना, न सताना पूजा है। भूखों को भोजन देना, पौशाला (प्याऊ) चलाना, रास्ता बताना, रास्ता बनाना, रास्ता साफ करना, सन्तों के लिए यात्रा का किराया देना, यात्रा के लिए भोजन-जलपान की व्यवस्था कर देना, अन्न क्षेत्र चलाना, गरीब बीमार एवं किसी भी बीमार को नित्य देखने जाना तथा हाथ में फल, दूध मेवा, भोजन आदि उसके उपयुक्त खाने-पीने की वस्तुओं को ले उसे विनम्रतापूर्वक समर्पित करते हुये मधुर वाणी से हाल खबर पूछना, धैर्य बँधना, रक्तदान करना, दवा में मदद एवं शारीरिक सेवा करना धर्म (कर्तव्य) पूजा है। किसी की मृत्यु हो जाने पर कफ़न सहित अंतिम संस्कार में तन, मन, धन से सहयोग करना पूजा है। बाल भोग (जलपान), प्रसाद (भोजन), बनाने के पहले लकड़ी, कंडा, ईंधन को ठोंक-पीट लेना, सूजी, चीनी, दाल, चावल, सब्जी आदि को भली भाँति अमनिया (बीनना, साफ़ करना, निथारना, छानना) कर लेना पूजा है। जिन्हें पतित, अछूत, विधर्मी, नास्तिक, अपवित्र, काफ़िर, गरीब, दुःखी, तिरस्कृत जानकर दुनिया के लोगों ने ठुकरा दिया हो उनमें आत्मीय-भाव भरते हुए उनसे प्रेमपूर्वक मिलना पूजा है, जो हमारे खिलाफ़ गन्दी-गन्दी अफ़वाहें फैला, उड़ाकर हमें बदनाम कर समाज के लोगों की दृष्टि से गिराना चाहते हों और पेट पर लात मारते हों, गाली देते अपमान करते और घृणा ईर्ष्या दृष्टि से देखते हों, उनकी किसी से भी शिकायत न करना और निर्विकार एवं प्रतिशोध रहित रहना, बुराई करने वालों की बुराई न कर उनके प्रति अच्छा भाव रख उनका हित सोचना, करना पूजा है।

साधु को परिभाषित करते हुए वे कहते हैं कि- प्राचीन काल में आत्मज्ञानी, त्यागी, तपस्वी निज-पर के कल्याण करने वालों को ब्राह्मण, ऋषि, मुनि, श्रमण, भिक्षु, भगवान आदि कहा जाता था। आज वर्तमान में उन्हीं को सहजतया सन्त, साधु, सन्यासी, स्वामी जी, साहब, साहेब, साहिब, सरकार आदि कहा जाता है। शब्द अध्यात्म की लम्बी यात्रा करते-करते कालान्तर में अपने अर्थ को महापुरुषों का आश्रय पाकर बदल लेते हैं। यह एक तथ्य एवं सच्चाई है।

वे पुनः कहते हैं कि जो मनुष्य का मूल्यांकन उसके सम्प्रदाय, सुंदरता, भाषा, देश, क्षेत्र, वर्ण (काला-गोरा), जाति, उपजाति, गोत्र, सवर्ण-अवर्ण (ऊँच-नीच) कोरे ज्ञान से न कर उसकी सच्चरित्रता, यथार्थ आत्मज्ञान, सदाचार, शिष्टाचार, आचरण (अमल-क्रियान्वयन्) में उतर-ढले हुये यथार्थ ज्ञान, कला, मानवता, सद्गुरु, असाम्प्रदायिकता, सद्भावना सौहार्दता, मैत्री, करुणा, षट सम्पत्ति (शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपरामता, तितिक्षा), अन्दर बाहर के त्याग, प्रचण्ड वैराग्य, आत्मस्थिति एवं लोकोपकारी, उपलब्धियों आदि से करते हैं, वे ही सर्व शिरोमणि जगतपूज्य साधु-संत हैं।

अहं-हीनत्व की भावना त्यागकर सबके प्रति उदार भाव रखना ही साधुता एवं संतत्व है। जिनमें विद्या, जाति, यौवन, रूप, सुन्दरता, पद प्रतिष्ठा, सेवा, शक्ति आदि का अहंकार न हो वही साधु सन्त हैं।

जो बाहर से साधु का सुन्दर वेश बनाये छैल-छबीले बने और भीतर से मन के रँगीलेरसिया बने जन समूह में निरन्तर रह प्रपंच एवं राजनीति-कूटनीति की बातें करते रहते हैं, वे साधु-सन्त नहीं अपितु रंगे सियार कुपथगामी, निज पर को धोखा देने वाले शातिर डकैत, बदमाश, ठग, बटमार हैं।

मन से दूसरे का हित चिन्तन, कल्याण कामना; वाणी से हित, मित, सत, प्रिय वचन बोलना और शरीर, धन यथार्थ ज्ञान से दूसरे की सेवा उपकार करना साधुता-संतत्व है। दूसरों के अधिकारों की रक्षा करते हुये स्वयं कर्तव्यपरायण होना- साधु-सन्त का लक्षण है। दूसरों को सम्मान दे और अपमान कभी भी न करे। खुद सम्मान, अपमान में सम रहे। अपने ऊपर दूसरों

के द्वारा होने वाले आघात को निर्विकार सह प्रतिशोध (बदले) की भावना तक न रखे-यह साधुता एवं संतत्त्व का अत्यंत सराहनीय लक्षण है।

वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में श्री त्यागी का कहना है कि- आर्य परंपरा में प्राचीन काल में जो महात्यागी, तपस्वी, निर्विकारी, निःस्वार्थी, समदर्शी, ईमानदार, निष्पक्ष यथार्थ चिन्तन-मनन-आचरण करने वाले सत्यस्थ होते थे, उन्हीं को ऋषि एवं ब्राह्मण कहा जाता था। वहाँ जाति, वर्ण मत सम्प्रदाय के अनुसार नहीं। वेदों में 'ब्राह्मण' शब्द जाति का सूचक नहीं जैसा कि आजकल है, बल्कि ऋषि का पर्यायवाची शब्द है।

वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण और शूद्र को परिभाषित करते हुए वे कहते हैं- सदाचारी, सद्गुणी, शिष्टाचरण और मर्यादा का पालन करने वाला आत्म-ज्ञानी, जड़-चेतन के रहस्य को जानने वाला निष्काम मुमुक्ष ही ब्राह्मण है और देहाभिमानी, वर्णाभिमानी, धनाभिमानी ज्ञानाभिमानी, कपटी ही शूद्र है।

अन्त में वर्तमान समय के सन्दर्भ में भ्रष्टाचार और उसकी व्यापकता को उद्धृत करते हुए संत सत्यानन्द त्यागी कहते हैं कि- जिसका चरित्र, स्वभाव, चाल-चलन, व्यवहार, कर्म, आचार विधि, व्यवहार का तरीका आदि भ्रष्ट, बिगड़ा, दूषित होता है, उसे भ्रष्टाचारी दुराचारी कहा जाता है। जिस संस्था, पार्टी शासन, सरकार आदि के नियम भ्रष्ट, दूषित एवं मनुष्य, समाज, देश आदि को अवनति, पतन दुराचार, भ्रष्टाचार अशिष्टाचार देश-द्रोह एवं आतंकवाद की ओर ले जाने वाले होते हैं, वह संस्था, पार्टी, शासन, सरकार अथवा कोई विभाग, शासक भ्रष्टाचारी कहा जाता है।

जो विचार आत्मबल से परिपूर्ण होता है, वह दूसरे आत्मबलहीन विचार को काट देता है। मन में जब भ्रष्ट भाव विचार पैदा होते हैं, तो वाणी भी भ्रष्ट हो जाती है और इन्द्रियाँ भ्रष्टाचरण में प्रवृत्त हो जाती हैं। जिसके परिणामस्वरूप उसका उद्देश्य बदल जाता है। दिशा गड़बड़ हो जाती है। वह आसुरी प्रवृत्ति वाला बन भौतिकवादी हो जाता है।

परियोजना की प्रगति हेतु निम्न हस्तलेख एवं पुस्तकों का अध्ययन भी किया गया-

हस्तलेख-

(1)	जानकी दास	ज्ञान ककहरा	आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।
(2)	देवमुरारि	विचारमाल	,,
(3)	माखन	ज्ञान चौतीसी	,,
(4)	शिवनारायण स्वामी	संत उपदेश	,,

पुस्तकें-

(1)	बाबा कीनाराम	श्री पोथी विवेकसार
(2)	गुलाल साहब	गुलाल साहब की बानी
(3)	चौथानंद स्वामी	आत्म प्रकाश, स्वरूप ज्ञान
(4)	धरनीदास	धरनीदास जी की बानी
(5)	परशुराम चतुर्वेदी	उत्तर भारत की संत परम्परा
(6)	मोती सिंह	निर्गुण साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
(7)	रामधारी सिंह दिनकर	संस्कृति के चार अध्याय
(8)	हजारी प्रसाद द्विवेदी	नाथों सिद्धों की बानियाँ
(9)	George A. Griersion	The Modern Vernacular Literature of Hindustan
(10)	Pitambar Dutt Barthwal	The Nirgun School of Hindi Poetry

डॉ0 देवेन्द्र कुमार सिंह
मुख्य अन्वेषक

निवेदन

दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण शारीरिक विवशता की स्थिति में परियोजना से सम्बन्धित फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी आदि की सीडी उपलब्ध नहीं करा रहा हूँ। अग्रिम प्रगति आख्या में समुचित रूप से उपलब्ध कराने का निवेदन करता हूँ।

डॉ० देवेन्द्र कुमार सिंह
मुख्य अन्वेषक